

---

# Shri Raghava Ashtakam

---

## श्रीराघवाष्टकम्

---

### Document Information



---

Text title : rAghavAShTakam 3

File name : rAghavAShTakam3.itx

Category : raama, aShTaka

Location : doc\_raama

Transliterated by : Saritha Sangameswaran

Proofread by : Saritha Sangameswaran

Latest update : October 5, 2021

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

October 5, 2021

*sanskritdocuments.org*

---



श्रीराघवाष्टकम्



भुवनगुप्तये ब्रह्मणार्चितं दशरथालये व्यक्तिमागतम् ।  
जनकनन्दिनीलक्ष्मणान्वितं भज मनः सदा राममद्भुतम् ॥ १ ॥

कमललोचनं पापमोचनं स्वजनरञ्जनं दैत्यभञ्जनम् ।  
षडरिमर्दनं बोधवर्धनं भज मनः सदा राममद्भुतम् ॥ २ ॥

सुरपतिं ह्ययोध्यापुरे वरे सुरतरोः स्थले मण्डपान्तरे ।  
मणिमयासने सम्यगास्थितं भज मनः सदा राममद्भुतम् ॥ ३ ॥

अगणितौजसं दण्डसागरं प्रणततापसं साधुमानसम् ।  
अमितभाससं पीतवाससं भज मनः सदा राममद्भुतम् ॥ ४ ॥

अमरकिन्नरैस्सिद्धचारणैर्मुनिवरैर्नरैरप्सरोगणैः ।  
परमविद्यया सम्यगर्चितं भज मनः सदा राममद्भुतम् ॥ ५ ॥

मदनकोटिसौन्दर्यमोहनं चरणभक्तिभाक्कामदोहनम् ।  
हृदयपङ्कजेऽध्यात्महृत्पदं भज मनः सदा राममद्भुतम् ॥ ६ ॥

चरितविस्तरं कोटिभेषजं त्रिदशविश्रुतं नामसंस्थितम् ।  
जपति शङ्करोऽवाप्ततत्परं भज मनः सदा राममद्भुतम् ॥ ७ ॥

एतद्भुतं राघवाष्टकं प्रतिदिनं पठेद्भक्तिपूर्वकम् ।  
तनुमिमां यथाहेयकञ्चुकं विरहयँल्लभेज्ज्योतिरात्मकम् ॥ ८ ॥


इति श्रीशङ्कराचार्यकृतं राघवाष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥  
श्रीराघवार्षणमस्तु ।

The short thymn is found in Sarasvati Mahal Series manuscript (bearing B. No. 12766 and D. No. 21317). Though there is nothing extraordinary in the sentiments, the rhythm is very pleasing, being based on the model of Gopika Gita. The Stotra


is attributed to Sri Sankaracharya, though it is not to be found in any collection of Sri Adi Sankaracharya's works published so far. It is presumably the composition of one of the later pontiffs in the line of Sri Sankaracharya.

Encoded and proofread by Saritha Sangameswaran

---

——  
*Shri Raghava Ashtakam*

pdf was typeset on October 5, 2021

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

